"ऐ मन हरि सिउ ऐसी प्रीति करि"

• रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि । लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि । जल महि जीअ उपाई कै बिन जल मरण तिनेहि ।1।

अर्थः- हे मन ! परमात्मा के साथ ऐसा प्यार कर जैसा पानी और कमल के फूल का है और कमल फूल का पानी की लहरों से धक्के खाता है फिर भी परस्पर प्यार के कारण कमल का फूल खिलता ही है धक्कों से गुस्से नहीं होता पानी में कमल के फूलों को पैदा करके परमात्मा ऐसी खेल खेलता है कि पानी के बगैर उनकी कमल के फूलों की मौत हो जाती है ।

• मन रे किउ छूटहि बिन पिआर । गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ।1। रहाउ । रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछली नीर ।

अर्थः- हे मन ! प्रभू के साथ प्यार पाने के बगैर तू माया के हमलों से बच नहीं सकता पर ये प्यार गुरू की शरण पड़े बगैर नहीं मिलता गुरू के सन्मुख रहने वाले मनुष्यों के अंदर गुरू की कृपा से ऐसी प्यार - सांझ बनती है कि परमात्मा हर वक्त मौजूद रहता है गुरू उन्हें प्रभू भक्ति के खजाने ही बख्श देता है । हे मन ! परमात्मा के साथ ऐसा प्रेम कर जैसा मछली का पानी के साथ है ।

जिउ अधिकउ तिउ सुख घणो मनि तनि साँति सरीर । बिन जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणै अभ पीर ।2।

अर्थः- पानी जितना ही बढ़ता है मछली को उतना ही सुख आनंद मिलता है । उसके मन में तन में शरीर में ठंड पड़ती है । पानी के बगैर एक घड़ी भी जी नहीं सकती । मछली के दिल की यह वेदना परमात्मा स्वयं जानता है ।

• रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चात्रिक मेह । सर भरि थल हरीआवले इक बूंद न पवई केह । करमि मिलै सो पाईऐ किरत पइआ सिरि देह ।3।

अर्थः- हे मन ! परमात्मा के साथ ऐसा प्रेम कर जैसा पपीहे का बरसात के साथ है । पानी से सरोवर भरे हुए होते हैं धरती पानी की बरकत से हरी भरी हो जाती है । पर यदि स्वाति नक्षत्र में पड़ी वर्षा की एक बूँद पपीहे के मुंह में ना पड़े तो उसको इस सारे पानी से कोई सरोकार नहीं । पर हे मन ! तेरे भी क्या बस ! परमात्मा अपनी मेहर से ही मिले तो मिलता है नहीं तो पूर्बला कमाया हुआ सिर पर शरीर पर झेलना ही पड़ता है ।

रे मनि ऐसी हरि सिउ प्रीत करि जैसी जल दुध होई । आवटण आपे खवै दुध कउ खपणि न देई । आपे मेलि विंछुनिआ सचि वडिआई देई ।५।

अर्थः- हे मन ! हरि के साथ ऐसा प्यार बना जैसा पानी और दूध का है । पानी दूध में आ मिलता है दूध की शरण पड़ता है दूध उसको अपना रूप बना लेता है । जब उस पानी मिले दूध को आग पर रखते हैं तो उबाला पानी स्वयं ही बर्दाश्त करता है दूध को जलने नहीं देता । इसी तरह यदि जीव अपने आप को कुर्बान करे तो प्रभू विछुड़े जीवों को अपने सदा स्थिर नाम में मिला के लोक परलोक में आदर सत्कार देता है ।

• रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर । खिन पल नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि । मनमुखि सोझी ना पवै गुरमुखि सदा हजूरि ।५।

अर्थः- हे मन ! परमात्मा के साथ ऐसा प्यार कर जैसा कि चकवी का प्यार सूरज से है । जब सूरज डूब जाता है चकवी की नजरों से परे हो जाता है तो वह चकवी एक छिन भर एक पल भर नींद के बस में आ के नहीं सोती दूर छुपे सूर्य को अपने अंग - संग समझती है । जो मनुष्य गुरू के सन्मुख रहता है उसको परमात्मा अपने अंग - संग दिखाई देता है पर अपने मन के पीछे चलने वाले को ये बात समझ नहीं आती ।

मनमुखि गणत गणावणी करता करे सो होई । ता की कीमति ना पवै जे लोचै सभ कोई । गुरमति होई त पाईऐ सचि मिलै सुख होई ।६।

अर्थः- अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य अपनी ही प्रशंसा करता रहता है पर जीव के भी क्या वश ? वही कुछ होता है जो करतार

स्वयं करता कराता है । करतार की मेहर के बिना यदि कोई जीव अपनी उस्ततें छोड़ने का प्रयत्न भी करे और परमात्मा के गुणों की कद्र पहचानने का उद्यम करे तो भी उस प्रभू के गुणों की कद्र नहीं पड़ सकती । परमात्मा के गुणों की कद्र तभी पड़ती है जब गुरू की शिक्षा प्राप्त हो । गुरू की मति मिलने से ही मनुष्य प्रभू के सदा स्थिर नाम में जुड़ता है और आत्मिक आनंद का सुख पाता है ।

• सचा नेह न तुटई जे सतिगुर भेटै सोई । गिआन पदारथ पाईऐ त्रिभवण सोझी होई । निरमल नाम न वीसरै जे गुण का गाहक होई ।7।

अर्थः- प्रभू चरणों में जोड़ने वाला यदि वह गुरू मिल जाए तो उसकी मेहर के सदका प्रभू के साथ ऐसा पक्का प्यार पड़ता है जो कभी भी टूटता नहीं । गुरू की कृपा से परमात्मा के साथ गहरी सांझ डालने वाला नाम पदार्थ मिलता है । ये समझ भी पड़ती है कि प्रभू तीनों भवनों में मौजूद है । यदि मनुष्य गुरू की मेहर सदका परमात्मा के गुणों के सौदे को खरीदने वाला बन जाए तो इस को प्रभू का पवित्र नाम फिर कभी नहीं भूलता ।

खेलि गऐ से पंखणूं जो चुगदे सर तलि । घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलण अज कि कलि । जिस तूं मेलहि सो मिलै जाइ सचा पिड़ मलि ।8।

अर्थः- हे मन ! देख जो जीव पंछी इस संसार सरोवर पर चोगा चुगते हैं वह आपो अपनी जीवन खेल खेलकर चले जाते हैं । हरेक जीव पंछी ने घड़ी पल की खेल खेल के यहाँ से चले जाना है । यह खेल एक - दो दिनों में ही जल्दी ही खत्म हो जाती है । हे मन ! प्रभू के दर पे सदा अरदास कर और कह हे प्रभू ! जिसको तू खुद मिलाता है वही तेरे चरणों में जुड़ता है । वह यहां से सच्ची जीवन बाजी जीत के जाता है ।

• बिन गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैल न जाई । सोंह आप पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआई । गुरमुखि आप पछाणीऐ अवर कि करे कराई ।9।

अर्थः- गुरू की शरण पड़े बिना प्रभू चरणों में प्रीत पैदा नहीं होती क्योंकि मनुष्य के अपने प्रयास से ही मन में से अहंकार की मैल दूर हो सकती है । जब मनुष्य का मन गुरू के शबद में भेदा जाता है गुरू के शबद में पतीज जाता है तब ये पता चलता है कि मेरा और प्रभू का स्वभाव मेल खाता है या नहीं । गुरू की शरण पड़ के ही मनुष्य अपने आप को अपनी असलियत को पहचानता है । गुरू की शरण के बिना जीव अन्य कोई प्रयास कर - करा नहीं सकता ।

मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआई । मनमुखि सोझी ना पवै वीछुड़ चोटा खाई । नानक दर घर एक है अवर न दूजी जाई ।10। (1-59-60)

अर्थः- जो जीव गुरू के शबद में पतीज के प्रभू चरणों में मिलते हैं उनके अंदर कोई ऐसा विछोड़ा नहीं रह जाता जिसको दूर करके उन्हें पुन प्रभू से जोड़ा जाए पर अपने मन के पीछे चलने वाले बंदे को ये समझ नहीं पड़ती वह प्रभू चरणों से विछुड़ के माया के मोह की चोटें खाता है । हे नानक ! जो मनुष्य प्रभू चरणों में मिल गया है उसका प्रभू ही एक आसरा दृढ़ दिखता है । प्रभू के बिना उसे और कोई सहारा नहीं दिखाई देता अन्य कोई जगह नहीं दिखती ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"